

स्वच्छ भारत – स्वस्थ भारत

श्याम एस. सलिम

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन, केरल

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं से भरा हुआ देश है जहाँ बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह समय-समय के विकासों को समावेश करने में सक्षम देश है। आज़ादी के बाद पिछले 67 वर्षों के दौरान भारत में बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति हुई है। हरित क्रांति और दुग्ध क्रांति से भारत कृषि में आत्मनिर्भर बन चुका है और अब दुनिया के सबसे औद्योगिक देशों की श्रेणी में इसकी गिनती की जाती है। पिछले दशक के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा प्राप्त उच्च विकास दर देश में सेवा क्षेत्र के विकास को दर्शाती है।

भारत की बढ़ती हुई आबादी एवं भौगोलिक, भाषायी, सांस्कृतिक विविधताओं को ध्यान में रखें तो पूरे देश को साफ सुधरा करने का लक्ष्य सरकारों द्वारा घोषित कार्यक्रमों में सबसे कठिन लक्ष्योंवाला दिखता है। भारत के विकास में हर एक सरकार के सामने स्वच्छता एक मुख्य समस्या रही। “स्वच्छता स्वतंत्रता से ज़्यादा ज़रूरी है”. माननेवालों में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेहरू जैसे महान नेता थे। वर्ष 1986 और 1999 में शुरू किए गए केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम को बाद में निर्मल भारत अभियान के रूप में और इसके बाद स्वच्छ भारत अभियान के रूप में आगे बढ़ाया गया। निर्मल भारत अभियान को स्वच्छ भारत अभियान के रूप में पुनःगठित किया गया, जिसके दो लक्ष्य हैं - स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) एवं स्वच्छ भारत अभियान (नगर)। भारत सरकार इस अभियान के माध्यम से कचरा प्रबंधन प्रौद्योगिकियों की सहायता से स्वच्छता से संबंधित समस्याओं को दूर करना चाहती है।

स्वच्छता अभियान को सफल रूप से केवल व्यक्ति ही नहीं बल्कि केन्द्रीय सरकार के विविध कार्यालय

एवं निगम / संगठन द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। बातें तो हम सब कह सकते हैं पर उन बातों को लागू करना मुश्किल है। स्वच्छता अभियान से संबंधित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया पर उन कार्यक्रमों की अनुवर्ती कार्रवाई चिंता की बात है। इस दिशा में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीनस्थ भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का अलग पहलू है।

स्वच्छता अभियान – केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) में

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ समुद्री मात्स्यिकी के ज़रिए भारतीय विशेष आर्थिक क्षेत्र को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने हेतु नीतियों का आविष्कार करने में लगा हुआ है। वैदिक काल से ही भारत में भगवान वरुण- ‘समुद्री देवता’ को समुद्री नियमों को कायम रखने का प्रतीक माना जाता है। परन्तु विकास की चपेट में आकर देवता के रूप में मानने वाले समुद्र को राक्षस की तरह व्यवहार करने लगे। कूड़े कचड़े फेंककर समुद्री पर्यावरण को दोष प्रदान करने लगे। वर्ष 1947 से लेकर भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ समुद्र एवं तटीय क्षेत्रों की सफाई, स्वास्थ्य एवं संपत्ति को कायम रखने के कदमों में कार्यरत है।

प्रधानमंत्री द्वारा ‘स्वच्छ भारत अभियान’ आरंभ करने पर सी एम एफ आर आइ द्वारा विविध कार्यक्रमों जैसा कि मात्स्यिकी क्षेत्र में कूड़ा-कचरा प्रबंधन के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकियों का विकास, जागरूकता कार्यक्रम आदि आयोजित किए गए। मछली बाज़ार एवं अन्य मछली प्रसंस्करण क्षेत्रों में स्वच्छता से संबंधित कार्यशालाएं

संचालित की गयीं। मुख्यालय और क्षेत्रीय / अनुसंधान केन्द्रों में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसमें पोताश्रय, आस्पताल, स्कूल, पार्क, बस शेल्टर, बोट जेटी, समुद्री तट, कार्यालय परिसर की सफाई तथा वृक्षारोपण, बागवानी, कचरे का सही उपयोग आदि शामिल हैं। इस दिशा में किया गया एक महत्वपूर्ण कार्य है 'फिश सिमेट्री' (Fish Cemetery) की स्थापना। तटीय प्रदूषण और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव पर लोगों के बीच जागरूकता लाने के उद्देश्य से केरल के फोर्टकोची के समुद्र तट पर लगभग 2500 स्क्वायर फीट के क्षेत्रफल में समुद्र से संग्रहित प्लास्टिक के बोतलों और कचरों की हानिकारक पहलू के बारे में समाज को जानकारी का संदेश फैलाए जाने हेतु 'फिश सिमेट्री' नामक कलात्मक नमूना बनाया गया।

भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा नियमित रूप से एरणाकुलम बाज़ार के समुद्री मछली अपशिष्टों से 'फिशलाइसर' के नाम से खाद का

निर्माण करके बेचा जाता है। तरकारी खेती में अच्छे उर्वरक के रूप में इसका उपयोग किया जाता है। सी एम एफ आर आइ के बिक्री काउन्टर से स्वच्छ भारत चिह्न के साथ पैकट में यह बेचा जाता है।

इसके अतिरिक्त जनता में अवबोध जगाने हेतु 'मानव श्रृंखला' (Human Chain) और बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्वच्छता का संदेश केवल कार्यालय तक सीमित न होकर बाहरी जनता तक पहुँचाने का प्रयास सी एम एफ आर आइ की तरफ से हो रहा है।

स्वच्छता अभियान के सफल कार्यान्वयन के लिए सी एम एफ आर आइ को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीनस्थ संस्थानों के बीच पुरस्कार प्राप्त हुआ। नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह से डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने पुरस्कार प्राप्त किया।



एरणाकुलम बोट जेटी और गांधी स्क्वायर में स्वच्छता अभियान कार्यक्रम



फोर्टकोची समुद्र तट पर बनायी गयी फिश सिमेट्री का दृश्य



फिशलाइजर खाद के निर्माण का दृश्य



फिशलाइजर

एक कदम स्वच्छता की ओर नहीं बल्कि एक साथ स्वच्छता की ओर ही सी एम एफ आर आइ का प्रयास रहा। संस्थान ने स्वैच्छिक रूप से स्वच्छ भारत का लक्ष्य पूरा करने की रूचि कार्मिकों में ही नहीं बल्कि समाज में भी उजागर किया। स्थल की स्वच्छता के साथ दिल की स्वच्छता – हम इसी जोश के साथ आगे बढ़ रहे हैं

जैसा आप जानते हैं 'स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है'। यह कदम हर एक व्यक्ति को उठाना चाहिए ताकि पूरे देश का आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास हो सके। दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ विविधता में एकता रखनेवाले भारत देश को स्वच्छ भारत की ओर ले जाना हम सभी का कर्तव्य है।



सी एम एफ आर आइ में आयोजित मानव श्रृंखला



चित्रकला प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण



डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ स्वच्छता पुरस्कार प्राप्त करते हुए